P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III * Issue-XII*August-2016

गांधीवादी तकनीक ''सत्याग्रह'' – एक परिचय

वैशाली बड़ोलिया
शोधार्थी,
राजनीति विज्ञान विभाग
कोटा विश्वविद्यालय,
कोटा, राजस्थान

सारांश

सैकड़ो वर्षों से गुलामी की जंजीरों में जकड़ी भारत माता को स्वतंत्र कराने की दिशा में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने अहिंसा के मार्ग और सिद्धान्त का अनुसरण किया वहीं सत्याग्रह को भी स्वतन्त्रता प्राप्ति का सशक्त साधन बनाया। व्यक्ति और समाज को नैतिक बनाने के दृष्टिकोण से गाँधी जी ने सत्याग्रह मार्ग की आवश्यकता बताई है। जिसके अनुरूप मानव आचरण होना चाहिए अतः सत्याग्रह एक सक्रिय दर्शन व नया विज्ञान है जो वर्तमान में भी प्रासंगिक है।

मुख्य शब्द : स्वतन्त्रता, सत्य, अहिंसा, चरखा, सत्याग्रह, विश्व बंधुत्व, नैतिकता।

प्रस्तावना

गाँधीजी का सत्याग्रह एक आदर्श है। यह कर्मयोग का एक व्यावहारिक दर्शन है। यह राष्ट्रीय जीवन में सत्य व शालीनता की प्रतिष्ठा है। सत्याग्रह विशुद्ध आत्मिक शक्ति है, आत्मा सत्य का स्वरूप है। इसीलिए इस शक्ति को सत्याग्रह कहते है।

सत्याग्रह आत्मबल है और वह शस्त्र–बल का विरोधी है। सत्याग्रह धार्मिक साधन है इसलिए धार्मिक वृत्ति के मनुष्य ही उसका उपयोग कर सकता है। गाँधीजी कहा करते थे कि '' अहिंसा की वर्णमाला परिवार की पाठशाला में सीखी जाती है और फिर उसका प्रयोग राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर भी किया जा सकता है।''

गाँधीजी के सत्याग्रह का शाब्दिक अर्थ है–''सत्य का आग्रह या लक्ष्य पर दृढ़ रहना। गाँधीजी की मान्यता थी कि सत्य के प्रति आग्रह व्यक्ति को असीम शक्ति से सम्पन्न कर देता है। एक अहिंसक कार्य पद्धति के रूप में सत्याग्रह का अर्थ है –''ऐसा दृष्टिकोण जिसमें सबके प्रति जागृत प्रेम और सबके लिए कष्ट सहने की तत्परता व्यक्ति की प्रेरणा बन जाए।''[1]

सभी प्रकार के अन्याय, उत्पीड़न और शोषण के विरूद्ध आत्मबल का प्रयोग ही सत्याग्रह है। सत्याग्रह मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। वह हर परिस्थिति में अहिंसात्मक होता है। इसमें भौतिक शक्ति के प्रयोग या हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं है। इसके प्रयोगकर्ता के मन में विरोधी के प्रति कोई दुर्भावना नहीं होती। सत्याग्रह विरोधी को प्रेम की शक्ति के माध्यम से जीतने का सुनिश्चित विज्ञान है। ''अहिंसा परमो धर्मः'' इस शक्ति का प्रमाण है। अहिंसा सुषुप्त स्थिति है।, उसका जागृत स्वरूप प्रेम है। प्रेम के वश होकर यह संसार चलता है। यदि ''माइट इज राइट'' और 'सरवाइकल ऑफ द फिटेस्ट' जैसे विचार ही प्रधान रहे होते तो ये संसार कभी का नष्ट हो चुका होता।''[2]

सत्याग्रह की विभिन्न तकनीक है जो बहुमुखी है। सर्वप्रथम सत्याग्रही समस्या का विवेचन बिना किसी पुर्वाग्रह के करता है। सत्य किसी भी प्रकार के दुराव–छिपाव में विश्वास नहीं करता। ''आत्मपीड़न'' सत्याग्रह का प्रमुख नियम है। जिसके माध्यम से वह विरोधी पर विजय प्राप्त करता है।'' सत्याग्रह के लिए गाँधी जी ने जिन अस्त्रों का प्रयोग किया वे है –असहयोग, हड़ताल, सामाजिक व आर्थिक बहिष्कार, धरना, नागरिक अवज्ञा, हिजरत, उपवास आदि।''[3]

सत्याग्रह में दोनो पक्ष सत्याग्रही हो जरूरी नहीं। गाँधी जी ने सत्याग्रह के सन्देश में कहा ''मैं समस्त भारत के लिए अपने सभी देशवासियों से सविनय निवेदन कर रहा हूँ कि वे पूर्ण रूपेण शांत रहें। जो मेरे प्रति प्रेम भाव रखते है। वे अपना सच्चा स्नेह सत्याग्रही अर्थात् सत्य और अहिंसा में आस्था रखने वाले तथा अपने कष्टों के निवारण के लिए त्याग और दुःख सहन को ही एकमात्र साधन मानने वाले व्यक्ति बनकर ही प्रदर्शित कर सकते है।''[4]

गाँधी जी के दिखाये पथ द्वारा सभी लोग स्वशासित होकर दुःसाध्य लक्ष्य को सहजता से प्राप्त कर सकते है। व्यक्ति और समाज को नैतिक बनाने के दृष्टिकोंण से गाँधी जी ने सत्य व अहिंसा के सिद्धान्त बनाए। साधन एक बीज की तरह है और उद्देश्य एक पेड़। गाँधी जी के लिए साधन ही सबकुछ था उनके अनुसार यदि कोई व्यक्ति साधनों का ध्यान रखता है तो उद्देश्य स्वयं अपना ध्यान रखेंगे। ''सत्याग्रह कभी हारता नही, लेकिन जिन्हें सत्याग्रह करना

नहीं आता, वे हारते है। यह संघर्ष कामधेनु और कल्पवृक्ष के समान फलदायी है।''[5]

सत्याग्रह एक जीवन्त शक्ति है। यह पशुबल पर आत्मबल की विजय है यह बुराई को भलाई से, घृणा को प्रेम से, अत्याचार को कष्टों के प्रति अक्षुण्ण सहिष्णुता से जीतने का मंत्र है। मानव मात्र की अच्छाई में अपने इसी महामंत्र के कारण गाँधी जी सत्याग्रह की सफलता को निश्चित मानते है इसके द्वारा कठोर से कठोर अत्याचारी को भी सुमार्ग पर लाया जा सकता है। वास्तविक सत्याग्रही कभी असफल और पराजित नही होता। सत्याग्रह अथवा हृदय परिवर्तन के विस्मयकारी तरीके सरकार तथा सामाजिक अत्याचारियों एवं परम्परावाद के नेताओं सभी के विरूद्ध प्रयोग किया जाता है।

गाँधी जी ने सत्याग्रह के माध्यम से विश्व को सन्देश दिया है कि '' अन्याय व अत्याचार को चुपचाप सहन करना ईश्वर व मानवता के प्रति अपराध है अतः जहां अन्याय होता है उसका विरोध अवश्य सत्य व अहिंसा के आधार पर करना चाहिए इसके लिए उसे चाहे मृत्यु का भी आलिंगन क्यो न करना पड़े।''[6]

सविनय अवज्ञा सत्याग्रह का एक अन्य सक्रिय एवं गत्यात्मक रूप है गाँधी ने सविनय अवज्ञा को सत्याग्रह का जन्मसिद्ध अधिकार बताया। उन्होंने लिखा कि ''आदर्श स्थिति में सविनय अवज्ञा प्रत्येक नागरिक का अधिकार है'' ।[7]

सत्याग्रह की सफलता स्वयं सत्याग्रही के व्यक्तित्व पर निर्भर है। सत्याग्रही को निर्भीक होना चाहिए। उसे दण्ड के लिए अपने आपको प्रस्तुत करने के लिए सदा तैयार होना चाहिए। उसे कायर नही होना चाहिए। उसे अहंकारी, आततायी, निर्दयी नही होना चाहिए। सत्याग्रही का ईश्वर में विश्वास होना चाहिए तथा उसका जीवन पवित्र होना चाहिए, स्वभाव से कानून का पालन करने वाला होना चाहिए।

प्रजातंत्र में सत्याग्रह की सार्थकता है या नहीं स्वयं गाँधी जी के शब्दों मे ''पूर्ण अहिंसक, असहयोग कितना भी सुन्दर क्यों न हो परन्तु लोकप्रिय शासन में इसके लिए स्थान नहीं है।''[8] यदि प्रत्येक व्यक्ति कानून अपने हाथ में ले ले तो अराजकता छा जायेगी तथा स्वतन्त्रता की हत्या होगी। अतः सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा व उपवास का प्रजातंत्र में सीमित व्यवहार है।

गाँधी जी ने आजादी के संघर्ष के लिए अहिंसा व सत्य को अपना अजेय अस्त्र बनाया तो वहीं सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा को प्रतिरोधात्मक पक्ष के रूप में प्रतिष्ठापित किया। भारतीय जनता को स्वावलम्बी बनाने के लिए चरखा चलाने व कपास का सूत कातने के लिए प्रेरित किया।

भारत वर्ष सहित सम्पूर्ण विश्व की भौतिक और आध्यात्मिक समृद्धि अहिंसा सिद्धान्त से ही सम्भव है लेकिन अत्यन्त कष्टकारी स्थिति यह है कि आजाद भारत में महात्मा गाँधी के नाम पर घृणित राजनीति हो रही है।

गाँधी जी के अनुसार, ''मेरा उद्देश्य सिर्फ देश की सेवा करने, सत्य को खोजने और उसके अनुसार आचरण करने का है। इसलिए यदि मेरे विषय गलत सिद्ध हों तो मैं उनसे चिपटे रहने का आग्रह नहीं करूंगा और यदि वे सही निकलें तो देशहित के अनुरोध से मैं सामान्यः यह इच्छा रखूंगा कि दूसरे लोग उनके अनुसार आचरण करें।''[9] सत्याग्रह एक दुधारी तलवार है उसे जिस तरह काम में लाना चाहो उस तरह काम में ला सकते हो। चलाने वाला और जिसके ऊपर वह चलती हैं दोनों सुखी होते हैं यह रक्तपात नहीं करती फिर भी परिणाम उससे कहीं बड़ा प्रस्तुत कर सकती है।

गाँधी जी ने सत्याग्रह को सत्य की शक्ति के रूप में स्वीकार किया सत्य का अर्थ उन्होने आत्मा से ग्रहण किया। अतः सत्याग्रह को उन्होनें आत्मशक्ति, प्रेमशक्ति एवं सत्य की शक्ति हेतु आग्रह अर्थ में प्रतिपादित किया है।[10]

उद्देश्य

गॉधीजी की मौलिक विचारों की उपयोगिता और प्रांसगिकता का अध्ययन करना।

निष्कर्ष

मानवता के कल्याण का परम–तत्व अहिंसा आज उपेक्षित है। लेकिन एक न एक दिन अपना देश और सम्पूर्ण विश्व अहिंसा का ही अनुसरण करेगा। अहिंसा व सत्याग्रह की गूंज भारतवर्ष में गुंजायमान होगी तथा अपने विश्वबंधुत्व के मर्म से दूर विश्व को अहिंसात्मक शांति के सात्विक भाव से ओत–प्रोत करेगी। गाँधीजी का सत्याग्रह रूपी हथियार राजनीति के युद्ध–क्षेत्र में अनोखी खोज है। सत्याग्रह ने न केवल युद्ध कला को प्रभावित किया है, वरन् आये दिन होने वाली क्रान्तियों को भी दिशा प्रदान की है। सत्याग्रह ने मानवी ज्ञान और मानवी विचारधारा को भी निकट से प्रभावित किया है। अतः सत्याग्रह एक नया विज्ञान है। यह एक सक्रिय दर्शन है। संसार की विस्फोटक स्थिति में सत्याग्रह रूपी अस्त्र की अत्यन्त आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. धवन, गोपीनाथ : सर्वोदय तत्व दर्शन, पृ. संख्या 134
2. डॉ व्यास एच.एन., डॉ. आर्य बी. एल., सत्याग्रह का दर्शन, पृ. संख्या 13, पब्लि. – ग्रन्थ विकास
3. डॉ. रावत राजेश, डॉ. चतुर्वेदी सतीश, डॉ. शर्मा अशोक, गांधी चिन्तन में सत्याग्रह, पोइन्टर पब्लिशर्स, पेज. नं. 14
4. गाँधी एम. के., सत्याग्रह, पृ. सं. 238
5. डॉ. व्यास एच. एन., डॉ. आर्य बी.एल., ग्रन्थ विकास, सत्याग्रह का दर्शन, पे.नं. 26
6. डॉ. रावत राजेश, डॉ. चतुर्वेदी सतीश, डॉ. शर्मा अशोक, गांधी चिन्तन में सत्याग्रह, पोइन्टर पब्लिशर्स, पेज. नं. 53
7. महात्मा गांधी : यंग इण्डिया, 26 फरवरी 1925
8. महात्मा गांधी : हरिजन, 4 जुलाई 1946
9. डॉ. व्यास एच. एन., डॉ. आर्य बी.एल., ग्रन्थ विकास, सत्याग्रह का दर्शन, पे.नं. 26
10. गांधी महात्मा : सत्याग्रह अहमदाबाद, नवजीवन पब्लिशिंग हाऊस 1958, पृ. सं. 3–6